ACTIVITY: Tale Writing Competition- Culture

DATE: 27th May 2021 **PARTICIPANTS: IIIT SONEPAT**

Faculty of IIIT Sonepat keeps on encouraging students to participate in events. Moreover, we believe in holistic development of students. IIIT Sonepat conducted a Tale writing competition on "Culture" IIIT Sonepat. Many students participated in the same and submitted the slogans.

Tale of Fate under Divine Light

Once upon a time in the deep Himalayans, there existed a country called *Marutnagar*. It was a beautiful country inhabited by great saints. *Marutnagar* was a mini paradise. Gods often visit there and enjoy spending time there.

King had a newborn child and there was a custom when a king has a newborn child, that child gets a boon from the deity and the king asked air god *Pawan-dev* to grant his baby all the powers like him. *Pawan-dev* agreed to the king's wish and granted his child all the powers on an agreement that if he tried to misuse the powers they will faint. *Pawan-dev* also named him *Vayu-Putra*.

He became a brave and powerful king. Under his leadership, the people of *Marutnagar* forgot their previous king.

One day demon of arrogance decided to attack and capture *Marutnagar*. In the veil of night's darkness, he entered in king's mind. The next day in the court due to the demon's capture king decided to misuse his powers to capture *Swarga-Loka*. King's guru observed that he was under influence of a demon and called him to his residence after the court. King visited guruji's house and guruji asked the king to help him in a *Yagya*. King can't disobey his guru so he sat on the *Yagya* during *Yagya* guru chanted powerful mantras that demon in the king's mind had to exit.

When the king came into conscious he ran before the demon and killed him. The king thanked his guruji for saving him from a great crime.

MORAL: ***Even presence of a guru is sufficient to save us from any kind of darkness.***

Written by:
Bhavesh Vaid
IT 12012008

.

First Prize:

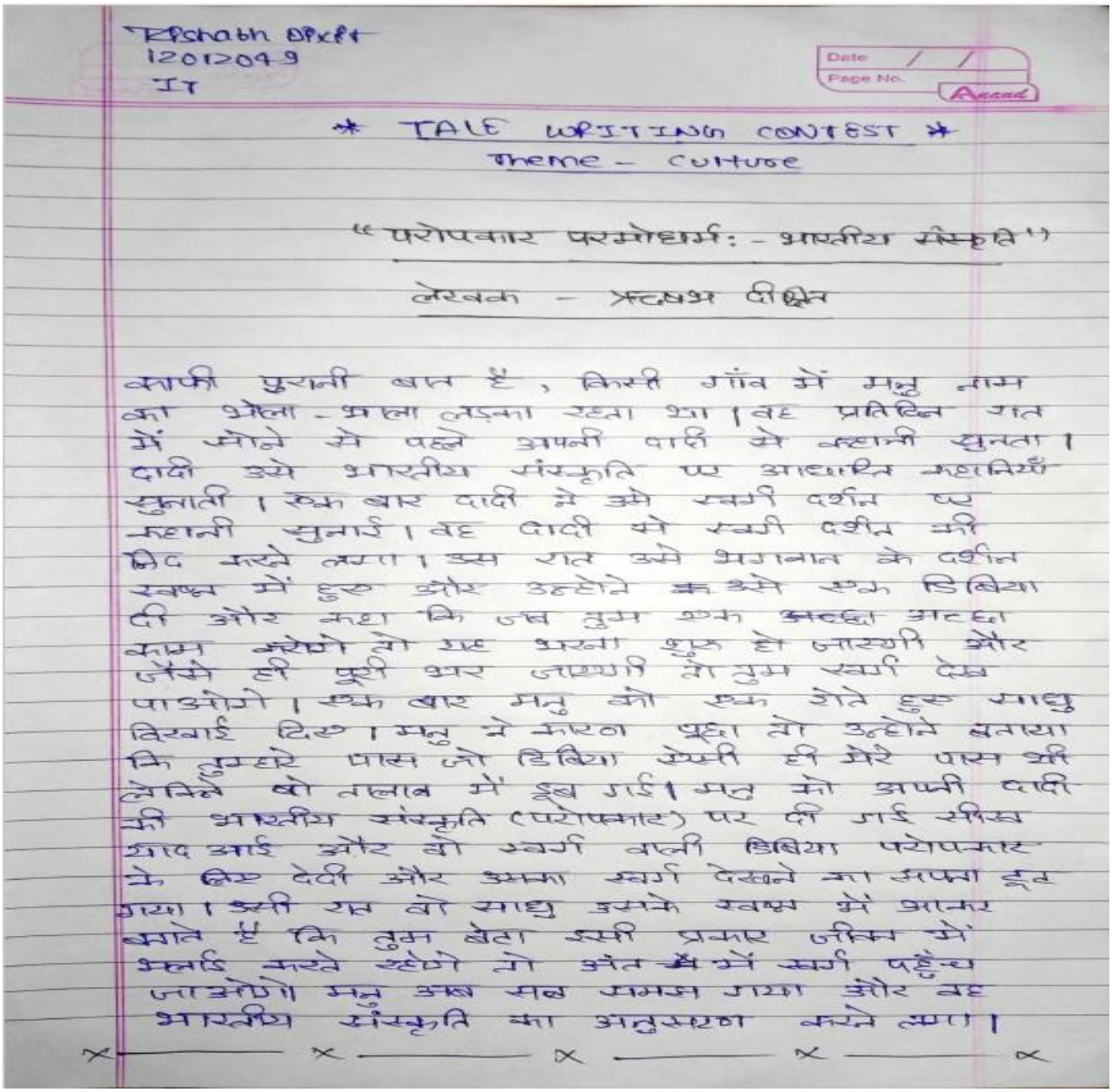

Rishabh Dixit
12012049
IT

* TALE WRITING CONTEST *

Theme – Culture

"परोपकार परमोधर्मः – भारतीय संस्कृति"

लेखक – ऋषभ दीक्षित

काफी पुरानी बात है, किसी गाँव में मनु नाम का भोला-भाला लड़का रहता था। वह प्रतिदिन रात में सोने से पहले अपनी दादी से कहानी सुनता। दादी उसे भारतीय संस्कृति पर आधारित कहानियाँ सुनाती। एक बार दादी ने उसे स्वर्ग दर्शन पर कहानी सुनाई। वह दादी से स्वर्ग दर्शन की जिद करने लगा। उस रात उसे भगवान के दर्शन स्वप्न में हुए और उन्होंने उसे एक डिबिया दी और कहा कि जब तुम एक अच्छा काम करोगे तो यह भरना शुरू हो जायगी और जैसे ही पूरी भर जायगी तो तुम स्वर्ग देख पाओगे। एक बार मनु को एक रोते हुए साधु दिखाई दिए। मनु ने कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि तुम्हारे पास जो डिबिया ऐसी ही मेरे पास थी लेकिन वो तलाब में डूब गई। मनु को अपनी दादी की भारतीय संस्कृति (परोपकार) पर दी गई सीख याद आई और वो स्वर्ग वाली डिबिया परोपकार के लिए देदी और उसका स्वर्ग देखने का सपना टूट गया। उसी रात वो साधु उसके स्वप्न में आकर बताते हैं कि तुम बेटा इसी प्रकार जीवन में भलाई करते रहोगे तो अंत में स्वर्ग पहुँच जाओगे। मनु अब सब समझ गया और वह भारतीय संस्कृति का अनुसरण करने लगा।

x — x — x — x — x

Second Prize

संस्कृति धार्मिक सहिष्णुता

भारत राष्ट्र-राज्य से ज्यादा एक सभ्यता है। इसकी अपनी परंपराएं हैं। इसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। देश के प्रत्येक हिस्सो मे प्राचीन परंपरा के अवशेष मिल जाते हैं।

आज के काल मे ये प्रश्न खड़ा हो रहा है कि क्या ये परंपराएं जीवंत हैं या मरणासन्न? => धार्मिक सहिष्णुता इन परंपराओ मे से एक है। इससे पहले ये अपना अस्तित्व खो दे इनके अवशेषो को एकत्रित करना अत्यन्त आवश्यक है।

- धर्म आदिकाल से ही मानव के लिए प्रमुख प्रेरक तत्व रहा है। चूँकि हिन्दू, मुस्लिम, जैन, सिख आदि धार्मिक संप्रदायों का उद्भव भारत मे ही हुआ अतः यहाँ धार्मिक विविधता का होना स्वाभाविक है।

"धार्मिक सहिष्णुता एक स्वस्थ समाज की नींव होती है"

स्वस्थ समाज की रचना मे 3 धार्मिक सहनशीलता बेहद ही अहम भूमिका रखती है। प्रत्येक धर्म मानवता का संदेश देने के साथ ही भाईचारे की बात करता है।

>... परन्तु आज हमें खुद से सवाल करना होगा की क्या ये बातें वास्तविकता से भिन्न नहीं प्रतीत होती हैं?

>... क्या अब हमारी संस्कृति धार्मिक सद्भावना लोगों के दिलो मे वास करती है? हमें वर्तमान की वास्तविकता पर एक नजर डालनी चाहिए।

- सहिष्णुता का तात्पर्य है सहनशीलता। दूसरे के विचारों से असहमत होने के बावजूद उसे समझना और उसका सम्मान करना। लेकिन बदलते बाजारवादी व भौतिकवादी युग मे इसका क्षरण होता जा रहा है। इसका नतीजा सामने है कि एक हस्ती पर पैदा होकर एक आसमान के नीचे जिंदगी बसर कर रहे लोगों मे गजहली कट्टरता चरम पर पहुच गई है।

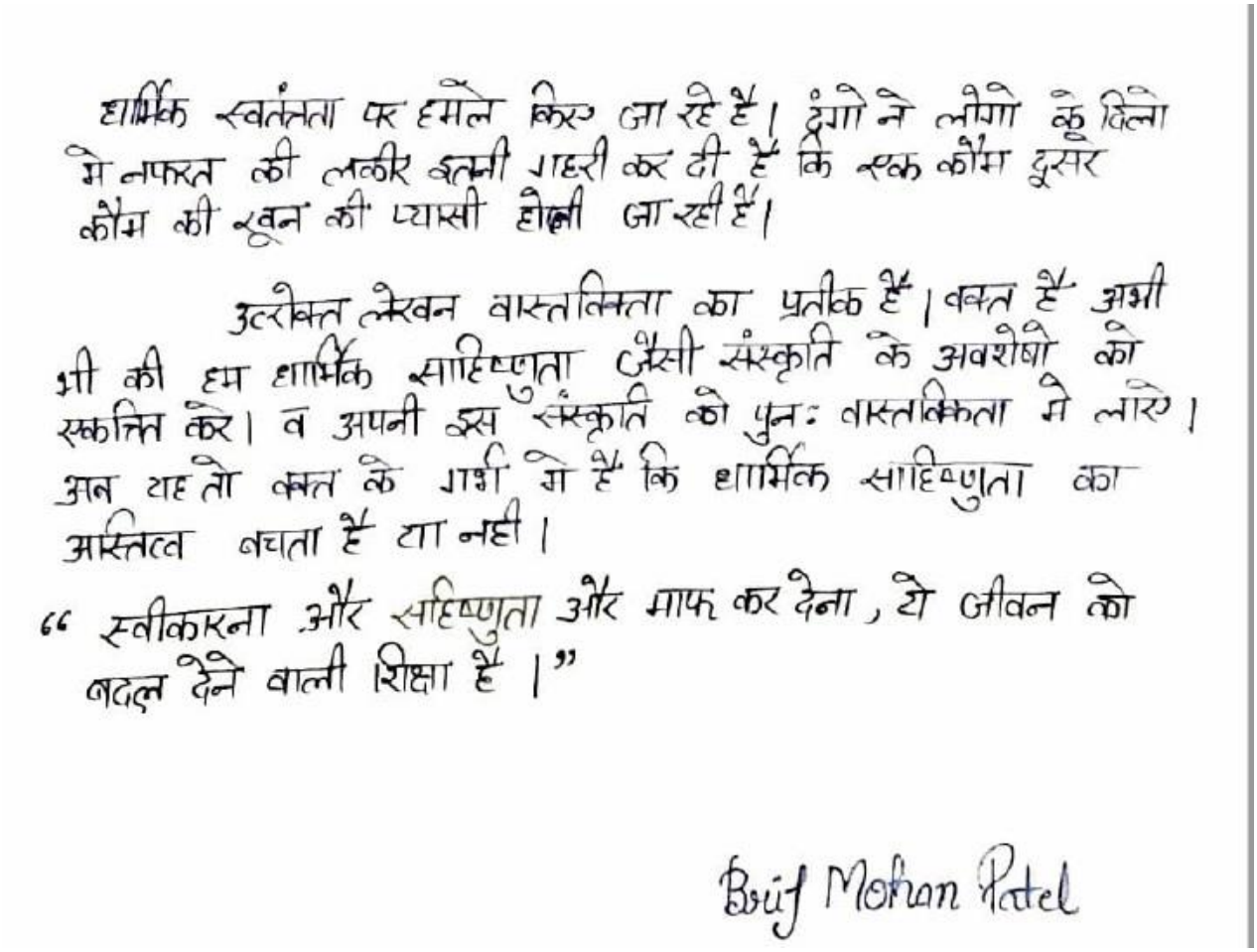

धार्मिक स्वतंत्रता पर हमले किए जा रहे हैं। दंगों ने लोगों के दिलों में नफरत की लकीर इतनी गहरी कर दी है कि एक कौम दूसरे कौम की खून की प्यासी होती जा रही है।

उल्लेखित लेखन वास्तविकता का प्रतीक है। वक्त है अभी भी की हम धार्मिक सहिष्णुता जैसी संस्कृति के अवशेषों को रक्षित करें। व अपनी इस संस्कृति को पुनः वास्तविकता में लाएं। अब यह तो वक्त के गर्भ में है कि धार्मिक सहिष्णुता का अस्तित्व बचता है या नहीं।

"स्वीकारना और सहिष्णुता और माफ कर देना, ये जीवन को बदल देने वाली शिक्षा है।"

Brij Mohan Patel

Third Prize